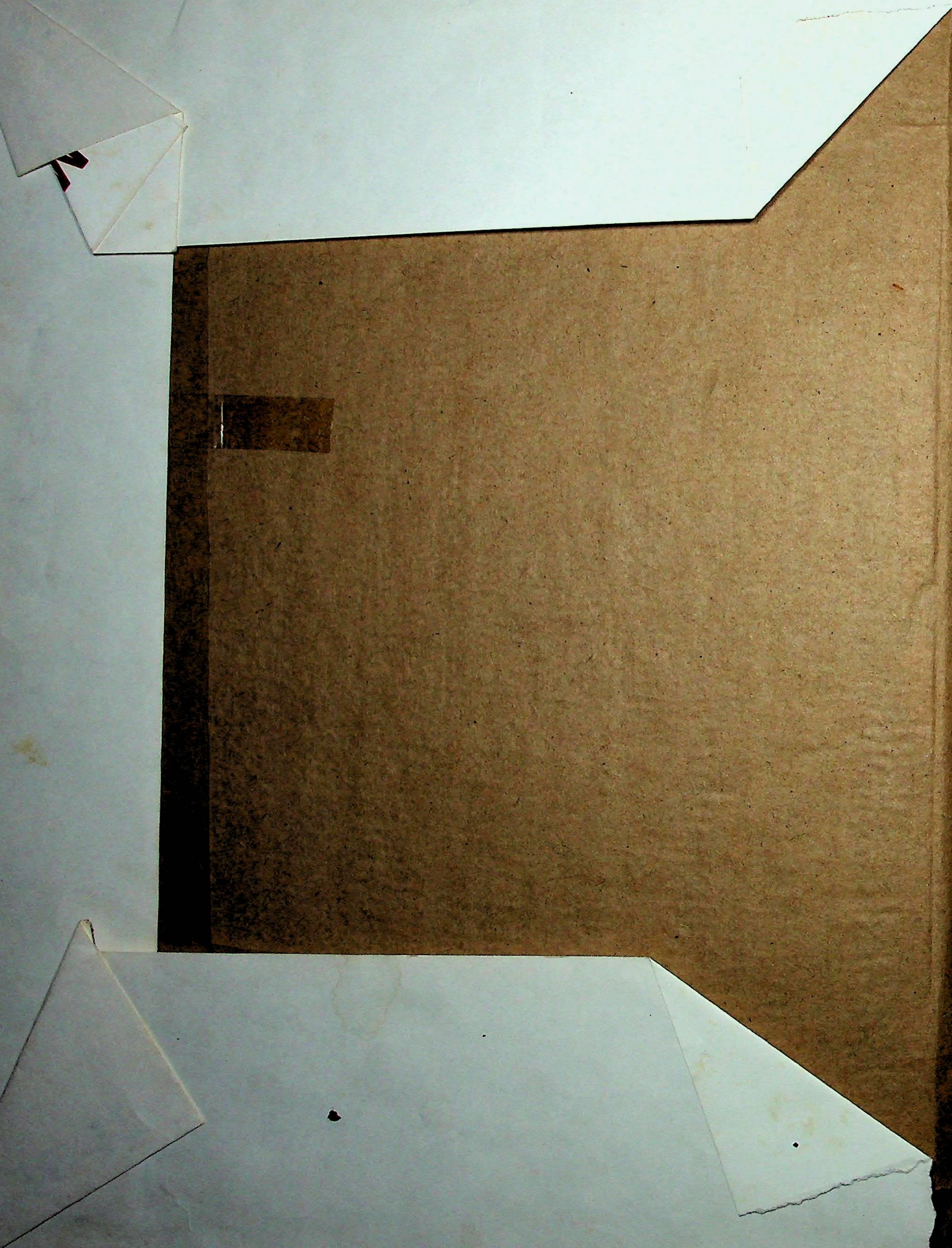
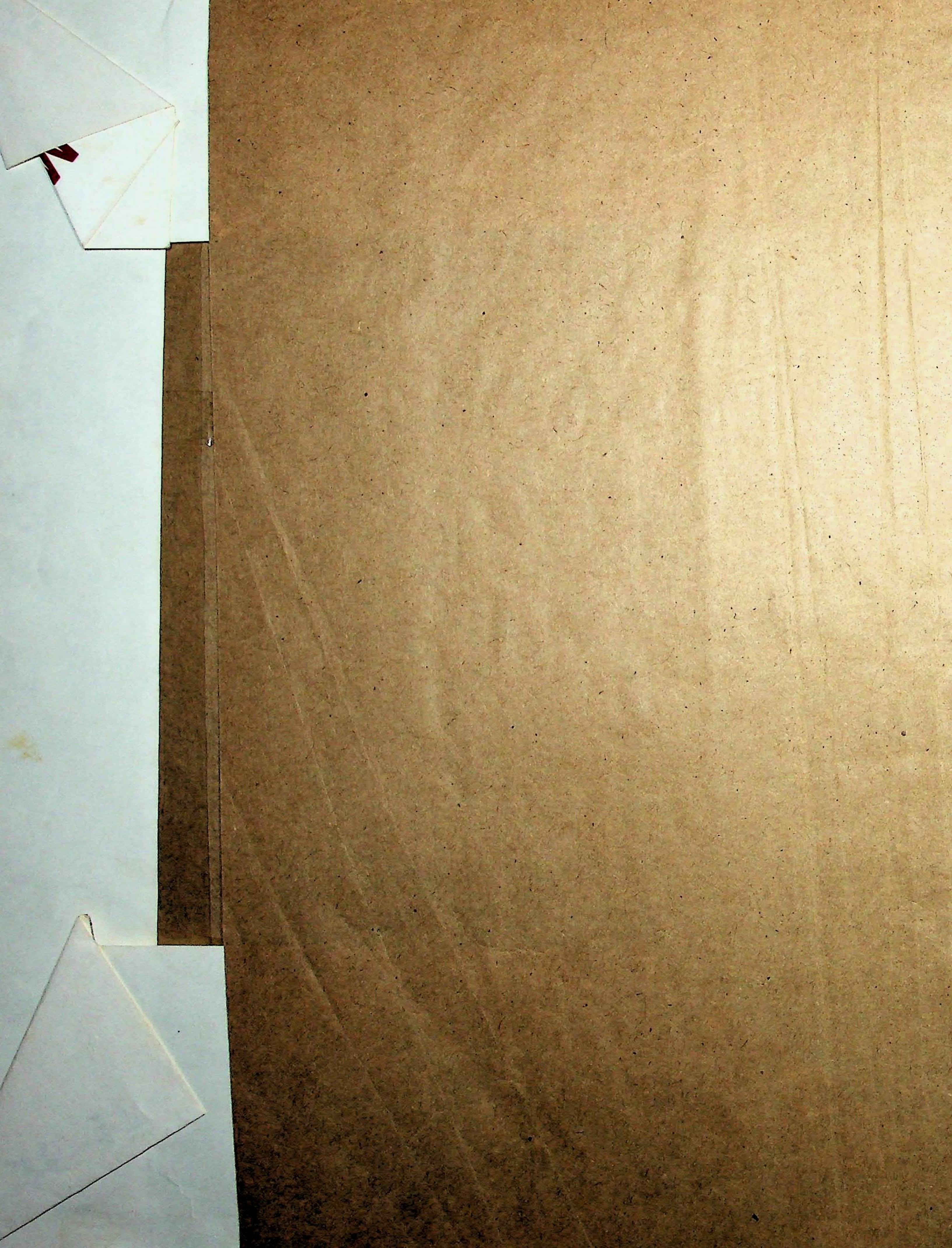


2nd COPY



सन् 1986 ई० में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत एवं वित्तीय सहायता प्रदत्त लघु-शोध परियोजना का विशिष्ट-खण्ड।

आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ

[सन् 1850-1970 ई०]

[प्रतिनिधि कवियों के कृतित्व पर आधृत]

A CRITICAL STUDY OF THE MAIN TRENDS IN MODERN KARHMIRI POETRY

(1850 - 1970 A. D.)

(BASED ON THE STUDY OF REPRESENTATIVE POETS)

[सारांश]
SUMMARY

(कश्मीर विश्वविद्यालय की डी० लिट् (हिन्दी) उपाधि हेतु सन् 1993 ई० में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)
(Thesis submitted to the University of Kashmir in the year 1993 for the award of D. Litt. Degree)

प्रस्तुतकर्ता :—
डॉ० भूषण लाल कौल
प्रोफ़ेसर एवं भूतपूर्व अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय, नसीमबाग़
श्रीनगर - कश्मीर।

"आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ"

(सन् 1850 – 1970 ई0)

(प्रतिनिधि कवियों के कृतित्व पर आधृत)

(सारांश)

कश्मीर विश्वविद्यालय को डी0 लिट् उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

1993

प्रस्तुतकर्ता :

प्रो0 (डॉ0) भूषणलाल कौल
आचार्य एवं भूतपूर्व अध्यक्ष,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर ।

सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध तीन खण्डों में विभक्त है और प्रत्येक खण्ड में कई उपशीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार का विभाजन मेरा अपना मौलिक प्रयास है।

प्रथम खण्ड में आधुनिक कश्मीरी काव्य की एक सशक्त प्रवृत्ति के रूप में रामकाव्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला गया है। यह खण्ड पुनः निम्नलिखित तीन उप-शीर्षकों में विभाजित है :-

(अ) कश्मीरी काव्य में रामकथा : विकास यात्रा के विभिन्न पड़ाव

(आ) 'प्रकाश रामायण' - एक खोज रिपोर्ट

(इ) 'विष्णु प्रताप रामायण' - एक क़लमी-नुसख़ा

प्रथम उपशीर्षक के अन्तर्गत आधुनिक कश्मीरी काव्य में राम कथा की विकास यात्रा पर विश्वसनीय सूत्रों के आधार पर प्रकाश डाला गया है। 19वीं शताब्दी के पाँचवें दशक में राम कथा ने यहाँ के प्रबुद्ध रचनाकार को सर्जना के लिये प्रेरित किया है और समसामयिक युग में भी नया कवि नये सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में राम कथा के विभिन्न प्रसंगों/पात्रों को नई सम्भावनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहा है।

कश्मीरी लोक साहित्य में राम कथा के कई प्रमुख पात्रों एवं

घटना प्रसंगों का उल्लेख मिलता है। पण्डित प्रकाशराम कुरिगामी कश्मीरी रामकाव्य के प्रथम जाने माने कवि हैं जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में रामकथा पर आधारित महाकाव्य 'रामावतार चर्यर्थ'/प्रकाश रामायण' लिखा। सर जार्ज अब्राह्म ग्रियर्सन ने प्रकाश राम के विषय में जो भ्रान्ति फैलाई उस पर तथ्यों के आधार पर विचार करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि प्रकाशराम उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में विद्यमान थे। इस के पश्चात् अन्य लेखकों द्वारा रचित कश्मीरी राम-कथा काव्यों कासंक्षिप्त परिचय देते हुए अन्त में किन्हीं महत्त्वपूर्ण शोध-निष्कर्षों को रेखांकित किया गया है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित दो महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों की ओर सुविज्ञ पाठक का ध्यानाकर्षित करना मैं आवश्यक समझता हूँ :-

1- वैष्णव भक्ति पर आधारित काव्य की कोई अति प्राचीन परम्परा हमें कश्मीरी साहित्य में नहीं मिलती है। वस्तुतः उन्नीसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक से ही राम-कथा पर आधारित प्रबन्ध रचनाओं का प्रणयन हुआ है। इससे पूर्व की किसी रामकथा काव्य परम्परा का हमें कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिलता।

2- फ़ारसी की रज़्मिया मस्नवी शैली एवं भारतीय गीति-शैली का मिश्रित रूप हमें इन रचनाओं में देखने को मिलता है। मूलतः ये वर्णनात्मक कथा काव्य हैं। राम के जीवन का इतिवृत्त कहने के साथ-साथ इन कवियों ने लीला एवं भक्ति परक गीतों की सुन्दर सृष्टि भी की है।

द्वितीय उपशीर्षक के अन्तर्गत पण्डित प्रकाशराम कुरिगामी द्वारा लिखित रामकथा काव्य 'रामावतार च्यर्थ' / प्रकाश रामायण का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । कश्मीरी भक्त-कवियों का समन्वयात्मक दृष्टिकोण वास्तव में एक ऐतिहासिक विवशता का परिणाम है । प्रस्तुत रामायण में रामकथा दो अक्षों पर एक साथ गतिमान है । राम के अवतारी रूप से सम्बन्धित कथा एवं दशरथ सुत के जीवन चरित से सम्बन्धित कथा ।

इस रामायण में भी मूल कथा परम्परागत रूप से कई कांडों में विभक्त है । मौलिक उद्भावनाओं के साथ-साथ दास्य भाव की भक्ति का सर्वोत्कृष्ट रूप हमें प्रस्तुत रामायण में देखने को मिलता है । मौलिक उद्भावनाओं की दृष्टि से कथा के प्रमुख आकर्षण इस प्रकार हैं :-

1- सीता मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न रावण की पुत्री है ।

2- देवराज इन्द्र के आदेश पर देवी सरस्वती कैकेयी के मन में वैमनस्य के बीज बो देती है । मंथरा (कुब्जा) की कोई भूमिका नहीं ।

3- अहिल्या शाप-निवारण का प्रसंग सदियों से पीड़ित तथा निरन्तर पुरुष की वासना का शिकार होती चली आ रही नारी के जीवनोद्धार से जुड़ा है । पुरुष-प्रधान समाज में चाहे सुरेन्द्र हों अथवा राक्षस राज दोनों हवस की भूख में अपना विवेक खो देते हैं ।

4- शूर्पनखा प्रसंग सीता हरण की भूमिका के रूप में प्रस्तुत हुआ है ।

5- मकरध्वज लिंग, लंका निर्माण, महिरावण देव तथा हनुमान पुत्र मकरध्वज से सम्बन्धित कथा प्रसंग रामायण की मुख्य कथा से जुड़े नये आयामों की सूचना देते हैं।

6- अग्नि-परीक्षण की माँग नारी शोषण का ज्वलन्त प्रमाण है।

7- सीता पृथ्वी में शरण लेती है - प्रकाशाराम के विश्वासानुसार यह पावन तीर्थ स्थल कश्मीर में है।

8- सीता परित्याग का कारण लोकापवाद नहीं अपितु सीता की ननद राम के मन में सन्देह के बीज बो देती है।

9- सीता के गर्भ से केवल लव का जन्म होता है और कुश के जीवनदान में वाल्मीकि की अलौकिक शक्ति का हाथ है।

10- सीता निस्सन्देह एक आदर्श पत्नी है परन्तु इससे कहीं अधिक आकर्षक उसका विद्रोही रूप है जो आधुनिक कालीन नारी जागरण की पूर्व सूचना देता है।

11- खलनायक की भूमिका में रावण का शक्तिशाली रूप अत्यन्त आकर्षक है।

12- रावण एक महान शिव भक्त होने के साथ-साथ एक चतुर कूटनीतिज्ञ भी हैं। वह हर सम्भव युक्ति से अपने प्रतिद्वन्द्वी को तोड़ने का यत्न करता है। वस्तुत: राजनीति में न कोई अपना होता है और न पराया, सब कुछ परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

13- मन्दोदरी के व्यक्तित्व के दो पहलू हैं - पत्नी रूप तथा मातृ रूप।

जीवन उसके लिये एक दुधारी तलवार है और यही उसके भीतरी तनाव और मानसिक द्वन्द्व की परिणाम है ।

14- सम्पूर्ण रामायणा का लोकाधार/लोकरंग इसे कश्मीरी जन-मानस के साथ जोड़ देता है और यह रंग देखते ही बनता है ।

प्रस्तुत रामायणा में भी लौकिक कथा के साथ साथ भक्ति से प्रेरित अद्भुत अलौकिक कथा का सृजन हुआ है । सूक्ष्म दार्शनिक चिन्तन प्रस्तुत रचना का एक प्रमुखाकर्षण हैं । निर्गुण और सगुण पर विचार करते हुए वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जगत तो निराकार की आनन्दमय साकार लीला है । सत्,चित् और आनन्द का समन्वित रूप ही रामावतार है ।

राम कथा के समस्त पात्र प्रस्तुत रचना में अवश्य अपनी अपनी निश्चित भूमिकाएँ निबाहते हैं परन्तु आध्यात्मिक रूप से कहीं अधिक आकर्षक उन का सामान्य मानवीय रूप है । कई नये प्रश्न पाठक के मन में स्वत: अंकित हो जाते हैं और इन प्रश्नों पर यहाँ मौलिक रूप से विचार करने का प्रयास किया गया है ।

अत: यह कहना उचित होगा कि कश्मीरी रामकाव्य के इतिहास में प्रकाशराम का 'रामावतार च्यर्थ' एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है ।

तृतीय और अन्तिम उपशीर्षक के अन्तर्गत पण्डित विष्णु कौल 'व्यास' के 'विष्णुप्रताप रामायणा' पर विचार किया गया है । पण्डित विष्णु कौल का 'विष्णु प्रताप रामायणा' अप्रकाशित है । स्वयं उन्होंने इसे फ़ारसी लिपि में लिखा है और इस लेखन कार्य को लगभग पाँच वर्षों में

पूरा किया । इसके हस्तलिखित 941 पृष्ठ हैं और 3,000 (तीन हज़ार) चरणों पर आधारित सात कांडों में विभाजित है । इस रामायण में भी प्रासंगिक कथाओं की सफल योजना हुई है जिन का सामाजिक, धार्मिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पर्याप्त महत्त्व है तथा जिन कथा प्रसंगों का कहीं न कहीं पौराणिक अथवा ऐतिहासिक आधार भी प्राप्त होता है ।

पण्डित विष्णु कौल की मौलिक उद्भावनाएँ बेजोड़ हैं । लंका कांड में रामचन्द्र और रावण (सत् और असत्) के मध्य हो रहे ज़बरदस्त युद्ध का वर्णन किया गया है । रावण अपने अहंकार में चूर था । उसे इस बात का गर्व था कि वह अपराजेय है अतः उस का विनाश आवश्यक था और इस आवश्यकता की पूर्ति रामचन्द्र के द्वारा होती है । आज के युग में भी हमें ऐसे रावण दीख पड़ते हैं जो अपनी राक्षसी शक्तियों के बल पर अन्याय करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं । आज व्यक्ति के लिए सब से बड़ीपहेली स्वयं उसका अन्तर्मन/गृह है जहाँ जाने कितने रावण एक साथ युद्धरत हैं । इस प्रकार रामकथा को समसामयिक युग के साथ जोड़ कर वास्तव में कवि उसको सर्वकालिक प्रासंगिकता की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं ।

प्रस्तुत रामायण पर 'वाल्मीकि रामायण' के अतिरिक्त तुलसीकृत 'रामचरित मानस' का भी गहरा प्रभाव पड़ा है । प्रकृति चित्रण एवं

भाषा प्रयोग की दृष्टि से भी इस रचना पर विचार किया गया है। अपनी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति के आधार पर दृश्यचित्र अथवा काव्य-बिम्बों के प्रस्तुतीकरण में कवि को विशेष सफलता प्राप्त हुई है। फ़ारसी भाषा का पण्डित विष्णु कौल पर कुछ गहरा ही रंग चढ़ा हुआ है। 'रामायण' का अध्ययन करने के पश्चात यह बात स्पष्ट होती है कि कवि ने इस कला कृति को सजाने सँवारने हेतु कश्मीर के प्राकृतिक वैभव का भर-पूर प्रयोग किया है। इस रचना में भी भक्त हृदय की विशेष अभिव्यक्ति विभिन्न लीलाओं एवं भक्ति परक गीतों के द्वारा हुई है। राम दशरथ-सुत होने के साथ-साथ नर-रूप नारायण भी हैं जो भक्त-जनों के परित्राण हेतु लीला क्षेत्र में सक्रिय दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत रचना का विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन करने के बाद पाण्डुलिपि से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विचार किया गया है।

दो प्रतिनिधि भक्त-कवियों की रचनाओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करने में मेरा यह उद्देश्य रहा है कि आधुनिक कश्मीरी काव्य के अन्तर्गत राम-भक्ति से सम्बन्धित काव्य-प्रवृत्ति की प्रमुख विशेषताओं एवं महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को रेखांकित कर सकूँ। गहन अध्ययन के बाद कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों के साथ प्रथम खण्ड को समाप्त किया गया है। यहाँ इस बात को स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि जब तक शोधार्थी को फ़ारसी लिपि, नस्तालीक़ लिपि, उर्दू भाषा, कश्मीरी भाषा और किसी

हद तक फ़ारसी भाषा की जानकारी प्राप्त न हो तब तक आधुनिक कश्मीरी काव्य पर किसी भी प्रकार का शोधकार्य करना सम्भव नहीं। यह एक ठोस वास्तविकता है और कोई भी विद्वान अथवा शोधार्थी इस हकीक़त से इन्कार नहीं कर सकता।

शोध-प्रबन्ध के द्वितीय खण्ड में धर्म, दर्शन एवं भक्ति के आधार पर आधुनिक कश्मीरी काव्य का अध्ययन किया गया है। इस विषय पर व्यवस्थित रूप से विचार करने के उद्देश्य से 'विषय-तालिका' निम्नलिखित चार उपशीर्षकों के अन्तर्गत इस प्रकार नियत हुई :-

आधुनिक कश्मीरी काव्य में धर्म, दर्शन एवं भक्ति

1- लीला एवं भक्ति काव्य :

अ) लछमन (लक्ष्मण) जू रैणा 'बुलबुल' सन् 1826 - 1898 ई0

आ) कृष्ण जू राज़दान सन् 1850 - 1926 ई0

2- आध्यात्मिक चिन्तन / विचार प्रधान काव्य तथा
भक्ति में 'लोल' का महत्त्व :

अ) मास्टर ज़िन्दा कौल सन् 1884 - 1966 ई0

3- सूफ़ी काव्य :

अ) समद मीर सन् 1892-94 - 1959 ई0

आ) अब्दुल अहद ज़रगर सन् 1909 - 1983 ई0

4- नात एवं मुनाजात :

अ) अब्दुल अहद नादिम सन् 1838-40 - 1911 ई0

लीला एवं भक्ति काव्य के अन्तर्गत आधुनिक कश्मीरी काव्य के दो प्रमुख भक्त कवियों लॅाखमन (लक्ष्मण) जू रैणा 'बुलबुल' एवं कृष्ण जू राज़दान के रचना संसार पर विस्तार के साथ प्रकाश डाला गया है। उद्देश्य केवल इतना रहा है कि आधुनिक कश्मीरी काव्य की इस सशक्त प्रवृत्ति का विश्लेषणात्मक (Analytical) अध्ययन करते हुए इसकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों पर सम्यक् प्रकाश डाला जाये।

इन कृष्ण भक्त कवियों ने लीला-गान के अन्तर्गत कृष्णमय होने की अलौकिक अवस्था में निजी आनन्दानुभूति से सम्बन्धित अनेक मौलिक छवि चित्र प्रस्तुत किये हैं। दो प्रतिनिधि कवियों की सर्जनात्मक प्रतिभा के आधार पर यहाँ कृष्ण भक्ति पर आधारित काव्य का मूल्यांकन किया गया है।

भक्ति के अन्तर्गत समन्वयात्मक चिन्तन से प्रेरित होकर इन कवियों ने कृष्ण लीलाओं के साथ साथ शिव-लीलाएँ/शिव स्तुतियाँ भी लिखी हैं। शैव और वैष्णव का यह समन्वय कई दृष्टियों से विचारणीय है। यहाँ कई महत्त्वपूर्ण मुद्दे सामने आते हैं जिन पर स्वतन्त्र रूप से बिना किसी पूर्वाग्रह (Prejudice) के विचार करके कश्मीरी लीला एवं भक्ति-काव्य की उपलब्धियों को रेखांकित किया गया है।

लॅाखमन जू रैणा 'बुलबुल' के जीवन चरित के विषय में कई भ्रान्तियाँ

हैं । अत: शंकाओं के निवारण हेतु तनिक विस्तार के साथ एकत्रित प्रमाणों का पुन: परीक्षण किया गया है अन्यथा भविष्य में 'बुलबुल' के साथ काफ़ी अन्याय होता ।

गोपी-प्रेम-प्रसंग के अन्तर्गत बुलबुल की मौलिक उद्भावनाएँ रचनात्मक कौशल का सर्वोत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करती हैं । वस्तुत: मौलिक उद्भावनाएँ जब चिन्तन और तर्क के गाम्भीर्य से बोझिल हो जाती हैं तो इस प्रकार का विचार प्रधान काव्य मानस के गहन अन्धकार को चीरता हुआ आत्म निवेदन में लीन भक्त-जन को मनन-चिन्तन के लिये विवश करता है । बुलबुल की मौलिक उद्भावनाएँ भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं । सगुण भक्ति काव्य के समस्त महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करते हुए यह देखा गया है कि आधुनिक कश्मीरी भक्ति-कवि अपने परिवेश से न केवल प्रभावित हुआ है अपितु उसके साथ घनिष्ठ रूप में जुड़ा हुआ भी है । भक्ति में लोक रस अथवा स्थानीय रंग सौन्दर्य बिम्बों की सृष्टि में सहायक सिद्ध हुआ है । यह इस काव्य की अपनी मौलिक उपलब्धि है । यहाँ रास लीला प्रसंग भी पर्याप्त आकर्षक है जिस में नृत्य, गायन और अभिनय की त्रिवेणी में प्रवाहित है - शृंगार रस । यह आनन्द की उच्चतम अवस्था है जहाँ भक्त अपने ही मानस के भीतर मन-मोहक को रास-रत देख लेता है ।

कहीं कहीं बुलबुल ने जहाँ मिश्रित ब्रजभाषा में कृष्ण लीलाएँ लिखी

हैं वहाँ कृष्ण जू राज़दान ने खड़ी बोली में भी गीतों और स्तुति-परक लीलाओं का प्रणयन किया है। राज़दान साहब पर शैव दर्शन का गहरा प्रभाव पड़ा था। 'शिव परिणय' उनकी एक बहुचर्चित रचना है। शिव-शक्ति की प्रणय कथा ने पण्डित जी को विशेष रूप से मोह लिया था। विभिन्न उपशीर्षकों के अन्तर्गत उन्होंने इस सूक्ष्म कथा-सूत्र को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। शैवमतानुयायी कश्मीर-वासियों के लोक विश्वासों की अत्यन्त मन-मोहक अभिव्यक्ति इस वर्णनात्मक कथा काव्य के माध्यम से हुई है। इस रचना में भी स्थानीय रंग बेहद शोख़ है। 'शिव परिणय' के रचनात्मक कौशल पर सामूहिक रूप से विचार किया गया है।

उनकी कृष्ण लीलाएँ माधुर्य गुण से ओत-प्रोत हैं। सम्पूर्ण प्रकृति को कृष्णमय देख कर वे रस छलकाते आत्म-विभोर हो उठते हैं। संगीत के साथ राज़दान साहब को विशेष लगाव था। वे स्वयं एक अच्छे गायक थे। मस्त होकर गाने के साथ-साथ नृत्य भी करते थे। उनके कृष्ण काव्य में लोक संगीत का योग मणि-कांचन का योग है। रास लीलाओं का अध्ययन करते समय लयावस्था अथवा आनन्द की अवस्था पर भी विचार किया गया है। यही तो सगुण भक्ति में मधु-मिश्रण है। दोनों कवियों (लक्ष्मण जू रैणा 'बुलबुल' तथा कृष्ण जू राज़दान) ने समान रूप से शिव एवं कृष्ण के प्रति अपनी अटूट आस्था व्यक्त की

है । कहीं कहीं यह निर्णय करना दुस्तर हो जाता है कि वे शिव भक्त अधिक थे अथवा कृष्ण भक्त ।

एक गीतकार के रूप में पण्डित कृष्ण राज़दान की उपलब्धियों पर भी सम्यक् रूप से विचार किया गया है । द्वितीय उपशीर्षक के अन्तर्गत आध्यात्मिक चिन्तन/विचार प्रधान काव्य प्रवृत्ति का गहन अध्ययन करने के उद्देश्य से 20वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी भक्त कवि मास्टर ज़िन्दा कौल को लिया गया है । मास्टर जी ने बहुत अधिक नहीं लिखा है लेकिन जितना लिखा है उसमें निस्सन्देह चिन्तन एवं विचार की गरिमा के साथ-साथ तथ्य-विश्लेषण एवं सत्य-निरूपण की अद्भुत क्षमता है । वे भी एक सगुण/निर्गुण भक्त कवि हैं जो अपने आराध्य के 'लोल' में बँध गए हैं और भक्ति के अन्तर्गत इस 'लोल' के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए सर्जन की नवीन दिशाओं की बराबर सूचना देते हैं ।

अपने मन की गहराइयों में उतर कर उन्होंने जीव, ब्रह्म और जगत के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार व्यक्त किये हैं । जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण स्वस्थ स्वीकारात्मक है । उन्हें विश्वास है कि जीवन को सफल बनाने के लिये त्याग की नीरसता नहीं अनुराग की सरसता अपेक्षित है । मास्टर जी ने 20वीं शताब्दी के इस तकनीकी युग में भक्ति की स्रोतस्विनी को प्रवाहित करके दग्ध मानव-हृदय को रससिक्त बनाने का भरसक प्रयास किया है ।

उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा पर शैव-दर्शन एवं तसव्वुफ़ का समान रूप से प्रभाव पड़ा है। मूल प्रेरणा भारतीय धर्म एवं दर्शन से प्राप्त हुई। कई महत्त्वपूर्ण चिन्तन पद्धतियों को ध्यान में रख कर मास्टर जी की सर्जनात्मक प्रतिभा का मूल्यांकन किया गया है।

तृतीय उपशीर्षक के अन्तर्गत आधुनिक कश्मीरी काव्य की एक सशक्त प्रवृत्ति के रूप में सूफ़ी काव्यधारा पर विस्तार से विचार किया गया है और विशेष अध्ययन के हेतु 20वीं शताब्दी के दो प्रमुख कश्मीरी सूफ़ी कवियों का चयन किया गया है।

सूफ़ी साधना की दार्शनिक पृष्ठभूमि, साधना-पथ पर आने वाले विभिन्न पड़ाव (शरीअत, तरीक़त, मारिफ़त और हक़ीक़त) तथा प्राप्त होने वाली विभिन्न अवस्थाएँ (नासूत, मलकूत, जबरूत एवं लाहूत) इश्क़े मजाज़ी से इश्क़े हक़ीक़ी की पहचान, विरह विवृत्ति, सफ़र की माहात्म्य, फ़नाअत नफ़्स, शून्य का महत्त्व, वज्दानी कैफ़ीयत, लयावस्था आदि अनेक मूलभूत तत्त्वों के आधार पर यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कश्मीरी सूफ़ी काव्य की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस पर भारतीय वेदान्त एवं अद्वैतशास्त्र की गहरी छाप है। अतः शास्त्र ज्ञान, सोऽहम् की दिव्यानुभूति, सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् के सार तत्त्व के रूप में 'ओ३म्' की पहचान, आत्मज्ञान तथा जीव, ब्रह्म, माया और जगत के पारस्परिक सम्बन्ध पर भी इन्होंने गहराई के साथ सोचा

है । इस प्रकार भारतीय चिन्तन से इनका तसव्वुफ़ प्रभावित हुआ और लौकिक-अलौकिक के समन्वय के साथ साथ इन्होंने विदेशी और स्वदेशी धार्मिक मान्यताओं और विचारों में भी सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है ।

इनकी रचनाओं के केन्द्र में प्रेमानुभूति शक्ति-स्रोत के रूप में निहित रहती है । इश्क़ के नानारंग माहौल को रंगीन बना लेते हैं लेकिन साथ ही साधना के पथ पर अकुलाहट और आतुरता फ़क़्र के महात्म्य से परिचित कराती है और चिदानन्द का बोध होते न होते माशूक़ अपने आशिक़ में लय हो जाता है । यही लयावस्था अथवा लाहूत की स्थिति साधना के अन्तिम पड़ाव अर्थात् हक़ीक़त का साक्षात्कार कराती है । दोनों कवियों के कृतित्व के आधार पर आधुनिक कश्मीरी काव्य की इस महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति पर विचार करने का प्रयास किया गया है ।

समदमीर के वर्णनात्मक खण्ड काव्य 'अकनन्दुन' की यथोचित चर्चा भी हुई है । इसी प्रकार अब्दुल अहद ज़रगर ने जो 'रास की कविता' लिखी है, उस पर भी प्रसंगोचित प्रकाश डाला गया है । शोध की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष भी दिये गये हैं ।

चतुर्थ तथा अन्तिम शीर्षक के अन्तर्गत इस्लाम धर्म एवं दर्शन से प्रभावित एक विशिष्ट काव्य प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है । कश्मीरी काव्य के इतिहास में नातगो कवियों की एक अविच्छिन्न परम्परा

देखने को मिलती है। भक्ति काव्य के अन्तर्गत हज़रत मुहम्मद साहब की छन्दोबद्ध स्तुति के हेतु अपनायी गयी एक विशिष्ट काव्य-विधा को 'नात' कहते हैं। इश्क़ मुहम्मदी 'नात' का मूल प्रतिपाद्य है और भक्त-कवि अपनी अनन्य निष्ठा के आधार पर ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल (ईशदूत) की स्तुति वन्दना में लीन होकर उनके सतत अनुग्रह का अभिलाषी रहता है।

यहाँ आधुनिक कश्मीरी काव्य के प्रतिनिधि नातगो कवि के रूप में अब्दुल अहद नादिम की रचनाओं का अध्ययन किया गया है। एक भक्त हृदय का निश्छल प्रेम उनकी रचनाओं में सर्वत्र मुखर हो उठा है। नातिया कलाम में अब्दुल अहद नादिम ने अपने महबूब-इलाही पैग़म्बर साहब के पवित्र जीवन की अद्भुत लीलाओं का श्रद्धा सहित चित्रांकन किया है। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि भँवर में उलझी हुई जीवन नैया ख़ुदा के रसूल की अनुकम्पा से ही अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच सकती है। दास्य भाव की भक्ति का यह सर्वोत्तम रूप है।

विश्वास और समर्पण के दृढ़ संकल्प ने नातगो नादिम की रचनाओं को अद्भुत सौन्दर्य प्रदान किया है। इनके नातिया कलाम में 'फ़नाअत नफ़्स' अर्थात् इन्द्रिय-निग्रह को विशेष महत्त्व दिया गया है। इसे उन्होंने जीवन की महान उपलब्धि के रूप में स्वीकारा है। 'नफ़्स' ही तो हमारा शत्रु है जो मीठी छुरी से मार करता है। सम्पूर्ण भक्ति

काव्य में भी इन्द्रिय-निग्रह पर विशेष बल दिया गया है ।

मुनाजात में ईश-प्रार्थना काव्य का प्रतिपाद्य विषय रहता है । यह एक ऐसा स्तुति गान है जिस में साधक ईशानुग्रह को जीवन की महानतम उपलब्धि मानता है । मुनाजात में कवि याचक बन कर भगवत् कृपा का प्रसाद पाने का अभिलाषी रहता है । नादिम भी अपने इष्ट के सम्मुख नत-मस्तक होकर नूरे इलाही की अद्‌भुत ज्योति से हृदय के तमसान्धकार को रोशन ‡दीप्त, प्रकाशमान‡ करना चाहता है । उन्हें दृढ़ विश्वास है कि मात्र ईश कृपा से ही जीवन के वीराने में शुभ्र ज्योति का प्रकाश खिल उठता है अतः नतमस्तक स्तुति वन्दना का अर्घ्य-समर्पण मुनाजात के रूप में होता है । नादिम ने नात के साथ-साथ मुनाजात भी लिखे हैं ।

फ़ारसी भाषा में काव्य की एक विधा शह्र आशोब कहलाती है । यह वस्तुतः व्यंग्य काव्य का ही एक रूप है । नादिम ने इस विधा को भी अभिव्यक्ति के साधन के रूप में ग्रहण किया है ।

आधुनिक कश्मीरी काव्य के अन्तर्गत प्रस्तुत काव्य-विधा का अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि इस्लाम-धर्म के आधार भूत सिद्धान्तों, मान्यताओं एवं विश्वासों ने यहाँ के सर्जनात्मक कलाकार के मानस पर न केवल अपनी गहरी छाप छोड़ दी है अपितु उसे निरन्तर सर्जन के लिये प्रेरित भी किया है और इस प्रकार इस्लामी चिन्तन के

प्रवेश से भारत में एक विशिष्ट समन्वयात्मक भक्ति-पद्धति का विकास हुआ । अब्दुल अहद नाज़िम ने कल जो अमृत धारा प्रवाहित की वह आज के तपते जीवन को सिक्त करते हुए अवश्य कल भी प्रवाही रहेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं । नात और मुनाजात की सम्यक् विवेचना के साथ ही द्वितीय खण्ड के अन्तर्गत शोध-निष्कर्षों को प्रस्तुत करने का कार्य पूरा हो जाता है ।

तृतीय खण्ड में 'आधुनिक कश्मीरी काव्य में नवयुग की अनुगूँज' मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन किया गया है । यह खण्ड कई उपशीर्षकों में निम्नलिखित रूप से विभाजित है :-

1- प्रेमकाव्य : मुहब्बत जाने जानाँ से

2- राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम : क्रान्ति का शंखनाद

3- प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद

4- विवशता प्रयोग की : अन्वेषण नये आयामों का

5- नई कविता : युग बोध एवं तलाश अस्तित्व की

6- हास्य एवं व्यंग्य : नश्तर की तेज़ धार

7- इश्क़े इलाही : दिव्यानुभूति

आधुनिक कश्मीरी काव्य में श्रृंगार वर्णन की एक स्वस्थ परम्परा देखने को मिलती है । यह न तो अप्सराओं का प्यार है और न राजकुमारियों का इश्क़ । यह प्यार लोक जीवन से जुड़ा हुआ है और

जीवन की समस्त ताज़गी इसे निरन्तर महकाती है । इसमें सौन्धी धरती की ख़ुशबू है और यह प्यार विवश जीवन का एक मूल्यवान उपहार है । 'महजूर', 'आज़ाद', 'आरिफ़' 'नाज़की', 'राही' एवं 'साक़ी' ने अन्य अनेक कवियों के साथ प्रेम के मधु मिश्रित स्वप्नों में जीवन का रस घोल दिया है ।

'महजूर' प्रेम को जीवन की महानतम उपलब्धि मानता है । उनके प्रेम में विरह की तड़प और जुदाई का ग़म है । स्थानीय रंग ने इसे जनमानस के साथ जोड़ दिया है । प्रेम-काव्य में महजूर की अद्भुत कल्पना है - ग्रीस कूर [कृषक बाला] । परम्परागत रूप से इनके प्रेम काव्य में सखि-वर्णन, मानमनुहार, पत्र-लेखन, दूत के द्वारा सन्देश पहुँचाने का दृढ़ संकल्प, व्यंग्य एवं उलाहने, प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण, परनायिका कल्पना आदि अनेक प्रसंगों को लेकर इश्क़ के नाना रंग खिल उठे हैं । फ़ारसी इश्क़िया शाइरी का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा है वस्तुतः यह प्रभाव अन्य कवियों में भी समान रूप से देखने को मिलता है लेकिन आधुनिक कश्मीरी काव्य में इश्क़ का तसव्वुर फ़ारसी का जूठन नहीं, कदापि नहीं ।

'आज़ाद' के प्रेम काव्य में भी मिलन की अतुराई, बतियाने की उत्कट इच्छा एवं मधुपान की चाहत बराबर देखने को मिलती है । विरह यानी जुदाई का ग़म रिसते घावों की मर्मान्तिक पीड़ा का एहसास दिला

रहा है। इनका प्रेमकाव्य भी सामान्य जन एवं जनानुभूति से जुड़ा है।

'आरिफ़' की विरह प्रधान इश्क़ या शाइरी में कुछ जान लेवा स्थितियों का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। महबूब के इश्क़ में आकुल व्याकुल कवि बन्धन मुक्त होकर ग़मे जानाँ को वाणी प्रदान करते हैं।

'नाज़की' की रचनाओं {रुबाइयों} में तो इश्क़े इलाही का अमृत स्रोत मुख्य रूप से प्रवाहित है लेकिन कहीं कहीं वे भी सौन्दर्योपासक के रूप में मुहब्बत की नाज़ुक स्थितियों का चित्रण करते हुए दिखाई देते हैं।

'राही' और 'साक़ी' तो मांसल प्रेमानुभूतियों के कवि हैं - माशूक़ : के इश्क़ में दीवाने। जहाँ राही के ग़ज़लों की प्रेमानुभूति मांसल, स्वप्निल और परवश कर देने वाली है वहाँ साक़ी को शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की चान्दनी रात में अपनी महबूब से मिलने की उत्कंठा है। साक़ी ने खुले दिल से अपनी सर्जनात्मक शक्ति के द्वारा जाम पर जाम पिलाये हैं और उन के रिन्द {रसिया} इस अमृतपान के हेतु हृदय कमल लिये प्रतीक्षारत हैं। 'राही' सौन्दर्य के नाज़ुक क्षणों की अनुभूति कराने वाले सिद्धहस्त कवि हैं। निस्सन्देह उन्होंने कश्मीरी ग़ज़ल को एक नया सौन्दर्य प्रदान किया। इश्क़ के ग़म को ग़नीमत जान राही जब ग़ज़ल कहता है तो सुषुप्त प्रेम में खलबली मच जाती है।

'राही' और 'साकी' की ऐक्यः शाइरी का अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है कि 'महजूर - आज़ाद' के युग से 'राही - साकी' के युग तक कश्मीरी श्रृंगार काव्य विकास की कई अवस्थाएँ तय कर चुकी है। बाह्य अथवा शारीरिक सौन्दर्य वर्णन से यात्रा आरम्भ हुई थी और आज अत्यन्त सूक्ष्म सौन्दर्य बिम्बों को मूर्त रूप प्रदान करने के हेतु अभिव्यक्ति के नये साधन तलाशे जा रहे हैं।

नवयुग की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति देश-प्रेम पर आधारित राष्ट्रीय तथा क्रान्तिकारी काव्य की है। इस दृष्टि से अन्य कवियों के साथ-साथ महजूर, आज़ाद, आरिफ़, नादिम एवं साकी का योगदान उल्लेखनीय है। इन कवियों ने स्वर्णिम अतीत का गौरवगान करते हुए दुर्दशाग्रस्त वर्तमान के अत्यन्त वीभत्स चित्र ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के रूप में प्रस्तुत किये हैं। इनकी सांस्कृतिक चेतना प्रखर है और जागरण गीतों के माध्यम से इन्होंने अर्द्धमृत मानव (समाज को नयी उत्तेजना प्रदान की। कश्मीरी काव्य) के मिज़ाज में इस बदलाव की प्रथम सूचना हमें महजूर के द्वारा प्राप्त हुई। देश व्यापी स्वतन्त्रता आन्दोलन ने 'महजूर' की कविता को नये आयाम प्रदान किये। श्रृंगारिक कवि महजूर देश प्यार के नग़मे गाता हुआ तथा विद्रोह और विप्लव की चिनगारियाँ सुलगाता हुआ शोषित और अपमानित देशवासियों को मरण-त्यौहार में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रण देने लगा। मातृभूमि के प्रति अनन्यानुराग, वर्तमान दुर्दशा, आर्थिक शोषण और पराभव, श्रमिकों एवं कृषकों की

दीन हीन दशा, जागरण गीत, आशावादी सन्देश, विप्लव गायन आदि अनेक महत्त्वपूर्ण आधार बिन्दुओं से इनके राष्ट्र काव्य का अध्ययन किया गया है। महजूर के राष्ट्र-काव्य में 'गुल' और 'बुलबुल' की शाइरी एक नये परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत हुई है। उनके राष्ट्र-काव्य में 'नया कश्मीर' का स्वप्न भी साकार हो उठा है।

'आज़ाद' ने देशप्रेम की कविता में नये मुद्दे जोड़ कर इसे वैचारिक गरिमा प्रदान की। मानवता वादी जीवन-दृष्टि, आत्म-सम्मान के साथ जीने की बलवती इच्छा, स्वस्थ मानव के जीवन व्यवहार में पूर्ण आस्था एवं जर्जरित व्यवस्था को बदलने के हेतु तपते शोलों को बाहों में समेटने का सामर्थ्य अर्थात् क्रान्ति का ज़ोरदार आह्वान उनके राष्ट्र काव्य में प्रमुख रूप से गूँज उठा है। आज़ाद को इन्क़िलाब में अटूट विश्वास है अतः नाश और निर्माण का उन्होंने समान रूप से स्वागत किया है, यह बात 'महजूर' में देखने को नहीं मिलती। प्रतीकात्मक रचनाएँ लिख कर 'आज़ाद' ने देशवासियों को मरण-त्यौहार में सम्मिलित होने के लिये ललकारा है। ये पूरे आत्मविश्वास के साथ आकाश को छूने वाली आग की लपटों का स्वागत करते हैं।

अपनी देशप्रेम सम्बन्धी रचनाओं में 'आरिफ़' ने भी व्यवस्था को बदल डालने का दृढ़ संकल्प व्यक्त किया है। वे भी अपने समसामयिक युग के प्रति सचेत हैं और हर तरह के अन्याय और शोषण का विरोध

उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। विद्रोह और क्रान्ति पर उन्हें अटूट विश्वास है अतः देशवासियों की दीन-हीन दशा का मार्मिक चित्रण करते हुए उन्होंने पराधीन जनसमुदाय की आशाओं और आकांक्षाओं को वाणी प्रदान की।

दीनानाथ नादिम की रचनाओं में अपनी जननी जन्म भूमि के प्रति अनन्य अनुराग मुखर हो उठा है। वे आने वाले कल के प्रति आस्थावान हैं क्योंकि उन्हें जीवन जीने में अटूट विश्वास है। विद्रोह और विप्लव के गीत भी उन्होंने लिखे हैं क्योंकि उन पर रूसी जन-क्रान्ति का ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा है। समाजवादी चिन्तन से प्रेरित होकर उन्होंने मेहनतकश के कुंठित सपनों में नये रंग भर दिये। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह एक महत्त्वपूर्ण घटना थी।

'राही' और 'साक़ी' ने भी देश प्रेम के गीत गाये हैं। इन रचनाओं के माध्यम से 'राही' की प्रखर सांस्कृतिक चेतना मूर्त हो उठी है और 'साक़ी' व्यापक स्तर पर जनहित की भावना से प्रेरित होकर देशानुराग पूर्ण रचनाओं के सर्जन में जुट जाते हैं। मोह भंग की स्थिति में दोनों व्यवस्था को बदल डालने के लिये व्यग्र हैं।

तरक़्क़ी पसन्द तहरीक से प्रभावित - प्रेरित होकर कई आधुनिक कश्मीरी कवियों ने समाजवादी चिन्तन पर आधारित रचनाएँ लिखी हैं और इस प्रकार कश्मीरी साहित्य में प्रगतिवादी काव्य प्रवृत्ति का

विकास 20वीं शताब्दी के मध्य में हमें देखने को मिलता है । यहाँ इस तथ्य को स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि तरक़्क़ी पसन्द तहरीक से प्रभावित कवियों ने एक सीमा तक ही मार्क्सी (मार्क्सवादी) चिन्तन के आधार भूत सिद्धान्तों को ग्रहण किया है और काव्य प्रवृत्ति के रूप में अल्पकाल तक ही ये सिद्धान्त सर्जन के हेतु प्रेरणा स्रोत रहे हैं । अब्दुल अहद डार 'आज़ाद' की कविताओं में सर्वप्रथम समाजवादी चिन्तन की वैचारिक गरिमा हमें देखने को मिलती है । वर्ग विभाजित समाज में दलित, शोषित और अपमानित जनमानस के अन्तर्निहित (भीतर स्थित) द्वन्द्व को उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से वाणी प्रदान की । उन्हें इन्क़िलाब पर अटूट विश्वास है अतः ज़मींदारी प्रथा और पूंजीपति व्यवस्था के प्रति अपने भीतरी आक्रोश को व्यक्त करते हुए सुषुप्त जन-समुदाय को विद्रोह के हेतु उत्तेजना प्रदान करते हैं ।

'आरिफ़' की रचनाओं पर भी तरक़्क़ी पसन्द तहरीक का गहरा प्रभाव पड़ा है । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटित होने वाली घटनाओं एवं चिन्तन पद्धतियों ने उन्हें जनमानस के साथ जोड़ दिया । व्यवस्था पर उन्हें विश्वास नहीं अतः इसे बदल डालने के हेतु वे कर्मयोगी के समान अपने दृढ़ संकल्प को अभिव्यक्त करते हैं । मार्क्सी चिन्तन का गहन और स्पष्ट प्रभाव 'नादिम' की रचनाओं में देखने को मिलता है । वर्ग-संघर्ष

की भावना, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद एवं अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त ने नादिम की सर्जनात्मक प्रतिभा को विशेष रूप से प्रभावित किया। रूढ़ि जर्जरित परम्पराओं पर कठोराघात करते हुए नादिम विद्रोह एवं विप्लव का शंखनाद एक नये आत्मविश्वास के साथ करते हैं। प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद को स्पष्ट और सफल अभिव्यक्ति नादिम की रचनाओं के द्वारा हुई है। अतः यह कहना उचित होगा कि आधुनिक कश्मीरी काव्य में नादिम प्रगतिवाद के प्रतिनिधि कवि हैं।

'राही' ने भी तरक़्क़ी पसन्द तहरीक से प्रभावित होकर जनवादी विचारधारा को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की। आलोचकों ने इसे नारा बाज़ी कह कर तिरस्कृत भी किया लेकिन मेरा विश्वास है कि राही की इन प्रगतिवादी रचनाओं का न केवल ऐतिहासिक महत्त्व है अपितु ये अंगूठी में नगीने के समान आकर्षक एवं कलात्मक भी हैं।

× × ×

प्रयोगवादी कविता एवं युगबोध की कविता अथवा नई कविता का सर्जन यहाँ साथ साथ होने लगा। इस दृष्टि से मिर्ज़ा ग़ुलाम हसन बेग 'आरिफ़', दीनानाथ नादिम, रहमान राही, मोतीलाल साक़ी तथा अन्य अनेक आधुनिक कश्मीरी कवियों का योगदान पर्याप्त चर्चित रहा है। कई विदेशी चिन्तन प्रणालियों एवं काव्य आन्दोलनों से प्रभावित होकर स्वातन्त्र्योत्तर युग में स्वप्न भंग की स्थिति ने कलाकार को अपने ही

भीतर सिमट कर सोचने के लिए विवश कर दिया । अपने मानस की गहराइयों में उतर कर कवि निजी अनुभवों को नये साँचों में ढालने के हेतु अथवा तथ्य के पुनः परीक्षण अर्थात् ज्ञात के द्वारा अज्ञात की खोज के हेतु नवीन प्रयोग करने लगा । अतिशय बौद्धिकता के कारण प्रयोग की दृष्टि विवेक के आधार पर विकसित हुई और समाजवादी चिन्तन के बदले व्यक्तिवादी चिन्तन ने हमारी जटिल संवेदनाओं को काव्याभिव्यक्ति के साथ जोड़ दिया । क्षणों की अनुभूतियाँ अथवा सूक्ष्म मन की नाना स्थितियों के आधार पर संक्षिप्त आकार की 'मिनी' कविताएँ लिखी जाने लगी । ये ज़िन्दगी के बहुरंगी फ़्लैश (क्षण दीप्ति) हैं जो कभी कभी चकाचौंध भी मचा देते हैं । स्वयं को एकाकी अनुभव करने की पीड़ा, भीतरी खोखलापन अथवा शून्य का एहसास इन कविताओं के माध्यम से उभर कर सामने आया । आधुनिकता का समर्थन करते हुए गहन वैयक्तिक अनुभूति के आधार पर इन कवियों ने अपनी बौद्धिक जागरूकता का परिचय दिया है । कभी कभी प्रयोगों की प्रचुरता के कारण पाठक कविता के इस अजायब घर में अपने आपको एक अजनबी के समान अकेला और उपेक्षित महसूस करता है । जनमानस और काव्य का पारस्परिक सम्बन्ध एक तरह से टूटता हुआ दिखाई देता है ।

x x x x

प्रयोगों के शीशा महल से बाहर निकल कर नया कवि विशुद्ध अनुभूति के स्तर पर जीवन के कटु यथार्थ को भोगता - झेलता साधनारत दिखाई देता है। आज स्वयं अपने अस्तित्व का प्रश्न मानव मन को अशान्त बना रहा है। क्षण के महत्त्व को स्वीकारते हुए आज कवि अपने भीतर के आक्रोश और तल्खी को नये प्रतीकों और बिम्बों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान कर रहा है। आज महानगरों की स्थिति कम्प्यूटर-युग की तूफ़ानी चाल का एहसास दिला रही है। आज स्थितों में द्रुत गति से बदलाव आ रहा है और परम्परागत विश्वासों एवं मान्यताओं के सम्मुख प्रश्न चिह्न लग चुके हैं। अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य से प्रभावित आज का पढ़ा लिखा और प्रबुद्ध कश्मीरी कवि विभिन्न काव्य आन्दोलनों, चिन्तन-पद्धतियों एवं साहित्यकारों की सर्जनात्मक प्रतिभा से भी प्रभावित हुआ है। कवि युग बोध के प्रति ईमानदार है अतः स्वप्न जालों में न उलझ कर वह ठोस तार्किक पृष्ठभूमि पर अपने जीवनानुभवों को नये नये साँचों में ढाल कर अभिव्यक्त कर रहा है। आज के तनाव पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति भी नयी कविता में खुल कर हुई है।

असंपृक्तता अथवा Alienation की भावना ने भी आज के नये कवि को ग्रस लिया है अतः अलगाव और अकेलेपन का एहसास भी कहीं-कहीं अभिव्यक्ति को जटिल बना देता है। आज की कविता की मूल

संवेदना शहरी है और यहाँ की नयी कविता में भी यह बात देखने को मिलती है। नयी कविता के अन्तर्गत इब्हाम भी चर्चा का विषय रहा है। कहने का अभिप्राय यह है कि आज का मानव जीवन अपनी समस्त विसंगतियों के साथ वैयक्तिक चिन्तन की सान पर चढ़ कर नयी कविता में व्यक्त होने लगा। इस प्रकार कश्मीरी साहित्य के इतिहास में नयी कविता नये लक्ष्य और उद्देश्य के साथ मुखर हो उठी और आरिफ़, नाजिम, राही और साक़ी ने अन्य अनेक नये कवियों के साथ इसकी श्री वृद्धि में अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान किया है।

× × × ×

आधुनिक कश्मीरी कविता में हास्य एवं व्यंग्य लेखन की कहीं क्षीण और कहीं वेगवान धारा प्रवाहित हुई है। इस दृष्टि से आरिफ़, नाज़की, साक़ी और लालि लाखमन का योगदान विचारणीय है। यह बात सर्व विदित है कि व्यंग्य कभी निरुद्देश्य नहीं होता। कवि एक निश्चित लक्ष्य को ध्यान में रख कर व्यंग्य की सृष्टि करता है। व्यंग्य कभी मीठी चुभन के साथ मानस को अशान्त कर देता है और कभी खंजर की धार के समान हृदय को चीर डालता है। व्यंग्य के प्रमुख तत्त्वों में Irony (ताना, कटाक्ष), Sarcasm (उपहास, मज़ाक़, आक्षेप), Invective (फटकार), Wit (बुद्धि चातुर्य, हाज़िर-जवाबी) तथा humour (हास्य) उल्लेखनीय हैं। वस्तुतः इन्हीं

[illegible]

तत्त्वों के समुचित सहयोग से व्यंग्य की सृष्टि होती है। हास्य व्यंग्य का पूरक है। यही व्यंग्य को सहय बना देता है। क़हवे में दालचीनी बादाम और इलायची का जो महत्त्व है वही व्यंग्य में हास्य का है। ज़ोरदार व्यंग्य रुला देने से पहले अवश्य हंसा देता है। हँसना और रोना ज़िन्दगी के दो अहम पहलू हैं और यही व्यंग्य का बाह्य और भीतर है। आरिफ़ की रुबाइयों में व्यंग्य समकालीन यथार्थ से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहीं सामाजिक जीवन की विभीषिकाओं पर हल्की चोट की और कहीं भीषण प्रहार। समकालीन नेताओं पर चोट करते हुए उन्होंने लिखा है कि 'सियासी दोस्ती तो काग़ज़ी नाव' है। इसे वे 'आया राम गया राम' का गठबन्धन समझते हैं।

नाज़की ने अपनी रुबाइयों में व्यंग्योक्तियों के सहारे व्यवस्था पर प्रबल प्रहार किये हैं। यहाँ उनकी काव्य प्रतिभा जीवन को बहुत गहराई में देखने, समझने और अनुभव करने की दिशा में प्रयत्नशील दिखाई दे रही है। राजनीतिज्ञों की दानवी लीलाओं को देख कर उनका व्यंग्य और भी तीक्ष्ण रूप धारण करता है। आज की अवसरवादी राजनीति से वे पर्याप्त निराश थे। कृत्रिम हाव-भाव, धर्म गुरुओं की छीना-झपटी, नेताओं के दाँव-पेंच और छद्म व्यवहार-कुशलता पर उन्होंने कस कर प्रहार किये हैं।

साक़ी के व्यंग्य काव्य में जीवन के कटु अनुभव मूर्त हो उठे हैं। उन्होंने अपने अनुभूत सत्य को व्यंग्योक्तियों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की। आज के ज़माने में ख़ुद अपने आपको पहचानना भी एक विकट समस्या है क्योंकि आज आदमी अभिनेता बन कर स्वयं अपने आपको ठगने का व्यर्थ प्रयत्न करता हुआ दिखाई देता है। साक़ी ने ज़िन्दगी को उसके वास्तविक रूप में जिया है और आज भी जीने के हेतु संघर्ष रत हैं। ज़िन्दगी अविश्वसनीय रूप में रंग बदलती हुई तथा 'साक़ी' के व्यक्तित्व पर अट्टहास करती हुई दिखाई देती है। उसी अट्टाहास की गूँज साक़ी के व्यंग्य काव्य का प्रमुख आकर्षण है।

उपर्युक्त व्यंग्य लेखकों में लालि लखिमन का योगदान भी पर्याप्त महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने भौतिक जीवन की त्रासदी पर व्यंग्य रचनाएँ लिखी हैं तथा रूग्ण परम्पराओं और सामाजिक रीति रिवाजों पर भी खुल कर चोट की है। व्यंग्य का एक ज़ोरदार पहलू है - उपहास जहाँ व्यंग्य लेखक, पात्र-विशेष अथवा स्थिति-विशेष की विकृतियों पर चोट करता है। लालि लखिमन अपने परिवेश के प्रति काफ़ी सचेत थे और जीवन की तल्ख़ हक़ीक़तों से ही उन्होंने अपने व्यंग्य काव्य के हेतु सामग्री एकत्र की है। उनके व्यंग्य काव्य में हास्य का पुट काफ़ी ज़ोरदार है।

शाखदर से लेकर चिट्ठी रसाँ तक ज़िन्दगी के नाना अनुभव इन

व्यंग्य रचनाओं में साकार हो उठे हैं ।

× × × ×

नयी कविता पर विचार करते समय मैं ने देखा कि नवयुग का कश्मीरी कवि इश्के इलाही के अलौकि अनुभव में जीवन की सार्थकता ढूँढने का प्रयास कर रहा है । यहाँ मानव अस्तित्व के विवेचन के साथ-साथ ईश्वरीय शक्ति के प्रति पूर्ण विश्वास व्यक्त हुआ है । इस विषय में दो मत नहीं हो सकते । मार्क्सी चिन्तन का राग अलापने वाले प्रतिभा सम्पन्न कवि भी ज़िन्दगी के अस्ताचल तक पहुँचते पहुँचते अद्भुत और अलौकिक को तलाशने में जुट जाते हैं । एक ओर इन कवियों ने धार्मिक शोषण और लूट खसूट अर्थात् धार्मिक व्यभिचार पर कस कर प्रहार किये हैं तो दूसरी ओर उस अद्भुत और अलौकिक के मूल रहस्य से अवगत होने के लिये ये अपनी जिज्ञासा भी निरन्तर व्यक्त करते रहे हैं । 'महजूर' 'सलाम-ए-महजूर' शीर्षक के अन्तर्गत संगृहीत रचनाओं में अपने इष्ट के प्रति नतमस्तक दिखाई देते हैं । आरिफ़ आज कल तसव्वुफ़ एवं अध्यात्म चिन्तन में लीन हैं । जीवन के अन्तिम चरण में वे मानव अस्तित्व के मूल स्रोत, सृष्टि-विकास के रहस्य तथा जीव और ब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार प्रधान कविताएँ लिख रहे हैं । वास्तव में लयावस्था की आनन्दानुभूति का दिव्याभास उन्हें अधीर कर रहा है । ईश अनुग्रह का प्रसाद पा कर ही जीवन सार्थक हो सकता है - इस बात पर उन्हें अटूट

विश्वास है। इश्क़े इलाही से प्रेरित होकर नाज़की ने कई रुबाइयाँ लिखी हैं जिनमें परमप्रिय की सम्यक् पहचान के हेतु (यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के लिए) भीतरी अकुलाहट को व्यक्त करते हुए कवि आत्म निवेदन की स्थिति में अपना सर्वस्व दाँव पर लगा देते हैं। इस प्रकार अद्वैत चिन्तन एवं इस्लामी दर्शन से प्रभावित होकर वे अपनी समस्त शक्तियों को समेट कर विराट सत्ता में लय होने के लिये आस लगाये बैठे हैं। इनकी मुक्तक रचनाओं में एक भक्त-हृदय की निश्छल भावना पूरे आत्म विश्वास के साथ व्यक्त हुई। इश्क़े-मुहम्मदी को नाज़की ने जीवन की सब से मूल्यवान उपलब्धि माना है। उन पर इस्लाम धर्म और दर्शन का गहरा प्रभाव पड़ा है। जीवन की क्षण भंगुरता और मृत्यु भय का एहसास उन्हें तलाशे हक़ के पथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है।

साक़ी अपनी विरासत से जुड़े हुए कवि हैं। वे अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा के प्रति न केवल सचेत हैं अपितु ईमानदार भी हैं। वे जीव, जगत, माया और ब्रह्म के मूल रहस्य एवं इनके पारस्परिक सम्बन्ध से अवगत होना चाहते हैं। विश्वनियंता की असीम शक्ति का आभास होने के साथ साथ जीव के क्षुद्र क्षणिक अस्तित्व का बोध उन्हें व्याकुल कर रहा है अतः रहस्यात्मक तथ्यों की उलझी गुत्थियों को सुलझाने में वे लीन दिखाई देते हैं। मूल 'तत्त्व' को तलाशने के हेतु साक़ी साधना के पथ पर 'शून्य' की टोह में रहते हैं। वे अद्वैतवादी दर्शन से प्रभावित हैं

तथा अपनी रुबाइयों में उन्होंने दिव्यानुभूति से सम्बन्धित अनेक विचारणीय तथ्यों को अभिव्यक्त किया है ।

लालि लाखमन की कविता का सब से सशक्त पक्ष लीला एवं भक्ति काव्य है । जो लोग उन्हें केवल व्यंग्य-कवि कह कर बात समाप्त करते हैं वे वस्तुतः अपने अज्ञान का ही प्रदर्शन करते हुए दिखाई देते हैं । लालि लाखमन के विचारानुसार लीलामय जगत सृजनहार की महानतम विभूति है । वे एक आस्तिक पण्डित थे । उन्होंने निर्गुण और सगुण को इष्ट के अव्यक्त और व्यक्त रूप में ग्रहण किया है । दास्य भाव की भक्ति पर आधारित उन के समस्त भक्ति काव्य को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है -- लीला-काव्य तथा मस्नवी शैली में लिखित वर्णनात्मक भक्ति-काव्य । लीलाकाव्य के क्षेत्र में वे परमानन्द एवं कृष्ण जू राज़दान की परम्परा में आते हैं । शैव-वैष्णव का समन्वय इन लीलाओं का प्रधान आकर्षण रहा है । अपने उपास्य-देव के प्रति नाना विध रूप से हृदयानुराग व्यक्त करते हुए वे साधनारत दिखाई देते हैं । नवधा भक्ति के अन्तर्गत लालि लाखमन ने स्मरण, अर्चन, वन्दन, दास्य सखि एवं आत्म-निवेदन को भक्ति की प्रमुख रूप से अपनाया है । इस प्रकार लालि लाखमन की कविता का सब से सशक्त एवं गरिमामय रूप हमें उनके भक्ति काव्य में देखन को मिलता है ।

x x x x

शोध प्रबन्ध का परिशिष्ट भाग भी महत्वपूर्ण है। इसे अन्तिम रूप देने में पर्याप्त सूझ-बूझ से काम लेना पड़ा। औपचारिकता को निबाहने के उद्देश्य से परिशिष्ट भाग को शोध-प्रबन्ध के साथ नहीं जोड़ा गया है। यह भाग सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध का पूरक है और प्रस्तुत प्रबन्ध से सम्बन्धित पाठक की हर तरह की जिज्ञासा को शान्त करने में सक्षम है। निम्न लिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत इसे व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया गया है :-

1- उर्दू, कश्मीरी, संस्कृत और हिन्दी पुस्तकों की सूची

2- अंग्रेज़ी भाषा में लिखित पुस्तकों की सूची

3- सहायक शब्द कोशों की सूची

4- पाण्डुलिपि

5- अप्रकाशित स्वीकृत शोध-प्रबन्ध

6- उर्दू, कश्मीरी और हिन्दी में प्रकाशित सहायक पत्र-पत्रिकाओं की सूची

7- अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की सूची

8- कुछ अहम दस्तावेज़ों की फोटोस्टेट प्रतियाँ।

एक पूर्व निश्चित क्रम के आधार पर सहायक पुस्तकों की सूची दी गई है। प्रयास यह रहा है कि प्रत्येक पुस्तक के विषय में हर तरह की

जानकारी साथ दी जाये। पुस्तक और लेखक/सम्पादक के नाम के साथ-साथ प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष, संस्करण इत्यादि के विषय में भी यथा-सम्भव जानकारी दी गई है। अन्तिम उपशीर्षक के अन्तर्गत कुछ अहम सरकारी चिट्ठियों, दस्तावेज़ों, प्रमाण-पत्रों एवं अलभ्य पुस्तकों के फोटो-स्टेट चित्र दिये गए हैं। शोध प्रबन्ध में 'अपनी बात' शीर्षक के अंतर्गत आरम्भ में ही शोधार्थी ने तथ्यों पर आधारित जो भूमिका प्रस्तुत की है उसको एक विश्वसनीय स्वरूप प्रदान करने में इन फोटो चित्रों का अपना विशेष महत्व है।

बात छाँटने में और सप्रमाण बात कहने में बड़ा अन्तर होता है।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में परिशिष्ट भाग की योजना सोद्देश्य हुई है।

उपरोक्त सारांश को ध्यान में रखते हुए शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा (Synopsis) का क्रमबद्ध स्वरूप इस प्रकार नियत हुआ :-

"आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ"

(सन् 1850 - 1970 ई०)

(प्रतिनिधि कवियों के कृतित्व पर आधृत)

अपनी बात : यथार्थ अपने बीभत्स रूप में — इंसानियत ग़मनाक ज़िन्दगी के

<u>खण्ड - एक</u> : <u>आधुनिक कश्मीरी काव्य में राम-कथा</u>

अ) कश्मीरी काव्य में राम-कथा - विकास यात्रा के विभिन्न पड़ाव

1- 'वनवुन' गीतों में राम-कथा का सांकेतिक उल्लेख

2- पण्डित प्रकाशराम कुरिगामी - 'रामावतार चरित' (उन्नीसवीं शताब्दी का पाँचवाँ दशक)

3- पण्डित शंकर कौल - 'शंकररामायण' सन् 1870 ई0

4- पण्डित आनन्दराम राज़दान -'आनन्द रामावतार चरित' सन् 1888 ई0

5- पण्डित विष्णु कौल 'व्यास' - 'विष्णुप्रताप रामायण' - सन् 1909-1914 ई0

6- पण्डित नीलकंठ शर्मा - 'रामायणि शर्मा' - - सन् 1919 - 1926 ई0

7- पण्डित ताराचन्द - 'ताराचन्द रामायण' - - सन् 1926 - 1927 ई0

8- पण्डित अमरनाथ 'अमर' - 'अमर रामायण' - सन् 1950ई0

9- भक्ति परक मुक्तक रचनाओं में मर्यादा पुरुषोत्तम राम

10- महत्वपूर्ण निष्कर्ष ।

आ) "प्रकाश रामायण" / रामावतार चरित - एक खोज रिपोर्ट

1- समन्वयात्मक दृष्टिकोण - ऐतिहासिक विवशता

2- रामकथा में मौलिक उद्भावनाएँ

3- लौकिक कथा के साथ आध्यात्मिक रूपक

4- दास्य भाव की भक्ति को सर्वोत्कृष्ट रूप

5- स्थानीय रंग

6- राम : दशरथ सुत अयोध्यावासी नागरिक तथा नर-रूप नारायण

7- सीता : आदर्श पत्नी एवं विद्रोही नारी

8- अग्निपरीक्षा : नारी अभिशाप का क्रूर प्रसंग

9- रावण : खलनायक की सफल भूमिका में

10- मन्दोदरी : पत्नी-रूप तथा मातृ-रूप

4- रास लीला एवं गोपी-प्रेम

5- शिव - लीला

6- विचार प्रधान कविताएँ

7- प्रबन्ध रचनाएँ

आ§ कृष्ण जू राज़दान § सन् 1850 - 1926 ई0 §

1- 'शिव परिणय' एक उत्कृष्ट सर्जना

2- शैव दर्शन का गहन प्रभाव

3- स्थानीय रंग : प्रमुख आकर्षण

4- कृष्ण भक्ति : लीला काव्य

5- रास लीला : सगुण भक्ति में मधु मिश्रण

6- खड़ी बोली में गीत और भजन

7- विचार - काव्य

8- लोक रस : भाषा और संगीत की दृष्टि से

II/ आध्यात्मिक चिन्तन/विचार प्रधान काव्य एवं भक्ति में 'लोल' का महत्त्व

अ§ मास्टर ज़िन्दा कौल § सन् 1884 - 1966 ई0§

1- जीवन : एक संघर्ष भूमि

2- मूल प्रेरणा स्रोत : भारतीय धर्म, दर्शन एवं प्राचीन इतिहास

3- विचार प्रधान कविता

4- भक्ति में चिन्तन का प्राधान्य : दर्शन का योग

5- शैव-दर्शन एवं तसव्वुफ़ का प्रभाव

6- 'लोल' की सार्थकता

7- वेदना की गहनानुभूति

8- कृष्ण भक्ति में कर्म-सन्देश

9- स्वस्थ भौतिक जीवन के प्रति आकर्षण

10- व्यंग्य - काव्य

11- आंचलिकता

III/ सूफ़ी काव्य

अ) समद मीर) सन् 1892-94 - 1959 ई0)

1- जीवन चरित : आराकश समदमीर में अज्ञात के प्रति आकर्षण

2- मज़दूर समदमीर एवं सूफ़ी साधक समदमीर

3- 'अकनन्दुन' : वर्णनात्मक खण्ड - काव्य

4- प्रेमाभिव्यक्ति : दोहरे अर्थ में

5- इश्क़ हक़ीक़ी : माशूक़ के लिये अकुलाहट

6- विरह विवृत्ति

7- सूफ़ी साधना में 'सफ़र' का माहात्म्य

8- क़नाअत नफ़्स : नियन्त्रण 'अहं' पर

9- लयावस्था : लाहूत की मंज़िल पर एक दिव्य आनन्दानुभूति

10- 'कुछ नहीं' : शून्य का महत्त्व

11- आत्मज्ञान / स्वानुभूति : परम सत्य का साक्षात्कार

12- शास्त्र ज्ञान : अद्वैतवादी चिन्तन का प्रभाव

13- ओउम् की पहचान : साधना का मूल लक्ष्य

14- नातिया कलाम

15- भाषा - प्रयोग : रेख़्ता भाषा

आ) अब्दुल अहद ज़रगर (सन् 1909 - 1983 ई0)

1- साधनारत जीवन चरित

2- कृतित्व

3- तसव्वुफ़ : जीवन की गहनानुभूतियों से साक्षात्कार

4- इश्क़ : मजाज़ी से हक़ीक़ी

5- प्रिय - विरह : वज्दानी कैफ़ीयत

6- शून्य : निर्गुण - निराकार ब्रह्म का प्रतीक

7- क़नाअत - नफ़्स : क्षणिक आकर्षणों के प्रति उदासीनता

8- भारतीय चिन्तन का प्रभाव : समन्वयवादी दृष्टि

9- सोऽहम् : अन्तरात्मा की आवाज़

10- ओ३म् : सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का सार-तत्त्व

11- इब्हाम : गुण अथवा दोष

12- त्रास की कविता

13- निष्कर्ष

IV/ नांत एवं मुनाजात

अ) अब्दुल अहद नादिम (सन् 1838-40 - 1911 ई0)

1- जान - पहचान

2- नांत : काव्य - विधा

3- विश्वास और समर्पण : नांतगोई का मुख्याकर्षण

4- क़नाअत नफ़्स : कुछ पाने के लिए सब कुछ खोना

5- नांतगोई : 'वनवुन' शैली में

6- मनाजात : इष्टदेव के प्रभुत्व का महिमा गान

7- स्तुति वन्दना : कुकर्ममय जीवन पर घोर पश्चाताप

8- शहर आशोब : समकालीन जीवन की विकृतियों
पर व्यंग्यात्मक प्रहार

9- युग-बोध : मूल्यहीन जीवन जीने की पीड़ा

10- फ़ारसी भाषा का प्रभुत्व : गुड़ मे छर्री का आभास

खण्ड - तीन : आधुनिक कश्मीरी काव्य में नवयुग की अनुगूँज
बन्दगी के जीवन में ज़िन्दगी का हुस्न

अः प्रेम काव्य : मुहब्बत जाने जानाँ से

आः राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम : क्रान्ति का शंखनाद

इः प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद

ईः विवशता प्रयोग की : अन्वेषण नये आयामों का

उः नई कविता : युग बोध एवं तलाश अस्तित्व की

ऊः हास्य एवं व्यंग्य : नश्तर की तेज़ धार

एः इश्के इलाही : दिव्यानुभूति

1. शृंगार-वर्णन, देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना एवं
क्रान्ति के अग्रदूत

पीरज़ादा गुलाम अहमद 'महजूर' [सन् 1887-1952 ई०]

1- सौन्दर्य धरती की ख़ुशबू

2- एक योद्धा का संघर्षमय जीवन

3- निर्द्वन्द्व व्यक्तित्व : सहज विनोद प्रिय स्वभाव

4- 'महजूर' - लेखपाल के रूप में

5- बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार

6- 'महजूर' की इश्क़िया शाइरी
7- प्रेम : विवश ज़िन्दगी का मूल्यवान उपहार
8- महबूब का तसव्वुर
9- प्रेम के प्रति महजूर का स्वस्थ भौतिक दृष्टिकोण
10- प्रेम में विरह की तड़प और जुदाई का ग़म
11- प्रेम काव्य में सखि-प्रसंग
12- प्रेम काव्य में स्थानीय रंग
13- सौन्दर्य की अद्भुत परिकल्पना : ग्रीस कूर (कृषक बाला)
14- महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष
15- महजूर के काव्य में देश-प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना
16- अपनी संस्कृति से लगाव : स्वर्णिम अतीत का गौरव गान
17- दुर्दशा ग्रस्त वर्तमान : युग सत्य की मार्मिक अभिव्यक्ति
18- एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में 'महजूर' का राष्ट्रीय काव्य
19- 'गुल' और 'बुलबुल' की शाइरी
20- आशावादी सन्देश एवं जागरण गीत
21- 'नया कश्मीर' का सुनहला स्वप्न
22- क्रान्ति का आह्वान : विप्लव एवं विद्रोह का स्वागत
23- राष्ट्र कवि महजूर : कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष

2. प्रेम काव्य, राष्ट्रीय काव्य एवं क्रान्तिकारी काव्य के रचयिता तथा प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद से अनुप्राणित :

अब्दुल अहद डार 'आज़ाद' (सन् 1903 - 1948 ई0)

1- एक स्कूल मास्टर अब्दुल अहद डार
2- 'आज़ाद की बहुमुखी प्रतिभा
3- एक कर्मवीर के रूप में 'आज़ाद'
4- आरम्भिक युग में विशुद्ध श्रृंगारिक रचनाएँ
5- परम्परा के प्रति आत्म समर्पण
6- मिलन की अतुराई, बतियाने की उत्कट इच्छा एवं मधुपान की चाहत
7- रिसते घावों की मर्मान्तिक पीड़ा
8- सखि वर्णन
9- श्रृंगार काव्य : कुछ अन्य आकर्षण एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ
10- समाजवादी चिन्तन का प्रभाव : वैचारिक गरिमा
11- स्वस्थ मानव के जीवन व्यवहार में दृढ़ आस्था
12- मानवतावादी जीवन दृष्टि
13- आत्म-सम्मान के साथ जीवन जीने की बलवती इच्छा
14- ज़मींदारी प्रथा तथा पूंजीपति व्यवस्था के प्रति आक्रोश
15- विश्व-व्यापी जन आन्दोलन का गहरा प्रभाव
16- व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता
17- क्रान्ति का आह्वान : तपते शोलों को बाहों में समेटने का सामर्थ्य

18- इंकिलाब में अटूट विश्वास

19- व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता

20- नाश और निर्माण का समान रूप से स्वागत

21- 'दरियाव' आज़ाद की एक बहुचर्चित प्रतीकात्मक नज़्म

22- 'नाल-ए-इबलीस' से प्रेरित 'शिकव-ए-इबलीस'

23- अपनी संस्कृति के प्रति आकर्षित : नास्तिक नहीं

24- विचार प्रधान लम्बी कविताएँ

25- कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष ।

3. शृंगार, देशप्रेम, राष्ट्रीय भावना, विद्रोह एवं क्रान्ति प्रगतिवादी चिन्तन, हास्य व्यंग्य एवं तलाशे हक़ के कवि

मिर्ज़ा गुलाम हसन बेग 'आरिफ़' ॥ सन् 1910 ई0

1- मेधावी छात्र साइंस के : विशेषज्ञ जन्तु-विज्ञान के

2- 'कश्मीर कल्चरल कांग्रेस' के सक्रिय कार्यकर्ता

3- आरिफ़ की बहुमुखी प्रतिभा

4- देशप्रेम की उत्कट भावना

5- व्यवस्था को बदलने का दृढ़ संकल्प

6- प्रेरणा तरक़्क़ी पसन्द तहरीक से : स्वागत विद्रोह और क्रान्ति का

7- स्वातन्त्र्योत्तर युग में मोह-भंग की भीषण स्थिति

8- नवीन काव्य प्रयोग - रुबाई : 'मिनी' कविता

9- द्वन्द्वात्मक एवं तनाव पूर्ण स्थितियों का कटु अनुभव

10- यथार्थ बोध : मूल्यों का अवमूल्यन

11- समकालीन यथार्थ से जुड़ा मर्मभेदी व्यंग्य

12- जीवनक के प्रति एक स्वस्थ स्वीकारात्मक दृष्टि

13- विरह प्रधान इश्किया शाइरी और ग़ज़ल

14- अध्यात्म चिन्तन : आरिफ़ का तलाशे हक़

15- भाषा - प्रयोग - कुछ अहम मुद्दे

16- आरिफ़ के 'वाख' (वाक्)

17- निष्कर्ष ।

4. राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम, प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद, परीक्षण एवं अन्वेषण तथा नई कविता के कवि :

पण्डित दीनानाथ कौल 'नादिम' (सन् 1916 - -1988 ई0)

1- संक्षिप्त परिचय

2- एक प्रतिभा सम्पन्न अध्यापक एवं कलाकार

3- अभाव ग्रस्त जीवन के दयनीय क्षणों की कटु अनुभूति

4- मातृभूमि के प्रति अनन्य अनुराग : देशप्रेम की कविता

5- देश भक्ति में समाजवादी चिन्तन का प्रवेश : अन्तरष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण घटना

6- प्रगतिवादी काव्य : रूढ़ि जर्जरित परम्पराओं पर कठोराघात

7- क्रान्ति का आह्वान : विद्रोह एवं विप्लव

8- वर्ग संघर्ष की भावना : सम्मान मेहनतकशा का

9- आने वाले कल के प्रति आस्थावान : जीवन जीने में अटूट विश्वास

10- स्वातन्त्र्योत्तर युग में स्वप्न भंग की स्थिति

11- प्रयोगवादी काव्य : नवीन सम्भावनाओं की तलाशने की प्रक्रिया

12- नई कविता : युग सन्दर्भ में मानव मनःस्थिति की पहचान

13- निजी संस्कृति के प्रति पूर्ण समर्पित

14- लोक रंग : महकता लोक संगीत

15- कुछ मौलिक प्रयोग : सॉनेट, गीति नाट्य, आज़ाद-नज़्म, 'मिनी' कविताएँ

16- कश्मीरी भाषा पर असाधारण अधिकार

17- अर्थ गाम्भीर्य एवं नाद सौन्दर्य

18- निष्कर्ष ।

5. सौन्दर्योपासना, यथार्थ बोध, हास्य एवं व्यंग्य, इश्क़े हक़ीक़ी और तलाशे हक़ तथा रुबाई के सफल कवि

मीर गुलाम रसूल 'नाज़की' (सन् 1912ई-)

1- संघर्ष पूर्ण जीवन : साधना के पथ पर निरत अग्रसर

2- अध्यापक नाज़की : ज़िन्दगी के स्कूल में अनुसंधित्सु

3- आकाशवाणी के श्रीनगर केन्द्र से वाबस्तगी

4- इस्लाम धर्म एवं दर्शन का गहरा प्रभाव

5- सर्जनात्मक साहित्य

6- ग़ज़ल, रुबाई और क़त्आत : मुक्तक काव्य

7- रुबाइयों में इश्क़े हक़ीक़ी

8- जीवन की क्षण भंगुरता एवं मृत्यु भय का एहसास

9- व्यंग्यकार नाज़की : सहजता और ईमानदारी के साथ गहन निरीक्षण जीवन का

10- कृत्रिम हाव-भाव : बेमानी इंसानियत

11- धर्म गुरुओं की छीना-झपटी : व्यापार धर्म का

12- राजनीतिज्ञों के दाँव-पेंच : कुशल योद्धा अखाड़े के

13- सौन्दर्योपासक 'नाज़की'

14- 'नाज़की' की कविता में प्रकृति

15- लोक-जीवन के खिलते - मुरझाते रंग

16- अभिव्यक्ति पर फ़ारसी और उर्दू की गहरी छाप

17- निष्कर्ष

6. मांसल प्रेमानुभूति, सांस्कृतिक चेतना एवं देश प्रेम, प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, इब्हाम, अतिशय-बौद्धिकता एवं संक्षिप्त नज़्म के कवि

अब्दुल रहमान 'राही' (सन् 1925 ई० —

1- जीवन चरित : कई संघर्षमय घुमावदार पड़ाव

2- अध्यापन कार्य : फ़ारसी भाषा और साहित्य से कश्मीरी भाषा और साहित्य तक

3- राही : स्वातन्त्र्योत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार

4- राही का तरक़्क़ी पसन्द काव्य : अंगूठी में नगीने के समान आकर्षक

5- राही के ग़ज़लों में प्रेमानुभूति : माँसल, स्वप्निल एवं परवश कर देने वाली

6- राही की कविता की प्रयोगात्मक प्रकृति : नये आयामों का अन्वेषण

7- आत्मबोध की कविता : तलाश अस्तित्व की

8- राही : नई कविता के शाइर

9- इश्तहार : बूढ़े बैल के कन्धों पर जुआ

10- बौद्धिकता का घटाटोप : तपते रेत के ज़र्रों में रस कणों की तलाश

11- संक्षिप्त नज़्म : मिनी कविता

12- राही की सांस्कृतिक चेतना : आकर्षण मातृभूमि के प्रति

13- राही मूलत: ग़ज़ल के शाइर

14- राही की काव्य-भाषा

7. शृंगार वर्णन, विरह गीतों, प्रकृति चित्रण, देश-प्रेम, सांस्कृतिक चेतना, नई कविता, युगबोध, 'मिनी' कविताओं, रुबाइयों, व्यंग्योक्तियों एवं आध्यात्मिक चिन्तन के कवि

मोती लाल राज़दान 'साक़ी' § सन् 1936 ई0 ——

1- संघर्षमय जीवन : ग्रामसेवक से शोध सहायक तक

2- प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में जीवन यापन

3- साक्षात्कार कटु यथार्थ से

4- बहुमुखी व्यक्तित्व : गद्य-लेखक, पाठालोचक, शोधकर्ता, सम्पादक एवं कवि

5- किसान कवि का साधना प्रधान जीवन : फक्कड़ व्यक्तित्व

6- मस्तमौला साक़ी के काव्य में श्रृंगार-वर्णन

7- विरह-गीतों में कराहती वेदना

8- साक़ी के काव्य में प्रकृति के विविध रूप : निरीक्षण की असाधारण क्षमता

9- देश-प्रेम की कविता एवं सांस्कृतिक चेतना

10- नई कविता : मोहभंग की स्थिति

11- 'साक़ी' की कविता में युग-बोध

12- जीवन जीने में अटूट विश्वास

13- 'मिनी' कविताएँ और रुबाइयाँ

14- व्यंग्योक्तियाँ

15- परम्परा के प्रति ईमानदार लेकिन क्रीतदास नहीं

16- परवर्ती युग में आध्यात्मिक चिन्तन के प्रति प्रबल आकर्षण : रहस्यवाद

17- साक़ी : कश्मीरी काव्य के भविष्य की आशा

18- कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

8. हास्य एवं व्यंग्य, भगवत् भक्ति, लीला एवं स्तुति-परक काव्य तथा भक्ति पर आधारित कथा-प्रधान वर्णनात्मक रचनाओं के प्रणेता

पण्डित लाखमन जू राज़दान / लालि लाखमन

(सन् 1892 - 1962 ई0)

1- जीवन-यात्रा की कटु मधुर स्मृतियाँ

2- माल-विभाग में नियुक्ति : मराज़ से कमराज़
3- लाँखमन जू राज़दान से लालि लाँखमन : शाखदर से चिट्ठो रसाँ
4- व्यक्तित्व के कुछ शोख़ रंग
5- हास्य व्यंग्य प्रधान काव्य
6- व्यवस्था के प्रति क्रुद्ध : घोर असन्तोष
7- कहीं हल्का प्रहार सांकेतिक रूप में : कहीं हथौड़े की चोट
8- व्यंग्य के आधार भूत तत्वों का निर्वाह
9- व्यंग्य का पूरक : हास्य
10- भौतिक जीवनी की त्रासदी पर व्यंग्य : अपने परिवेश के प्रति सजग
11- उपहास : दिल खोल कर मज़ाक़ उड़ाना
12- रूढ़ सामाजिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों पर चोट
13- हास्य व्यंग्य प्रधान रचनाओं का अभिव्यक्ति पक्ष
14- लालि लाँखमन के काव्य में भगवद् भक्ति
15- लीलामय जगत : सृजनहार की महानतम विभूति
16- दास्य भाव की भक्ति : भगवद् कृपा एवं अनुग्रह को पाने की सतत अभिलाषा
17- लालि लाँखमन का लीला काव्य : शैव और वैष्णव का समन्वय
18- स्तुतिपरक रचनाएँ : ईशवन्दना
19- कथा प्रधान वर्णनात्मक भक्ति-काव्य : भक्ति में लोक रंग
20- महत्वपूर्ण निष्कर्ष ।

परिशिष्ट-भाग :

1- उर्दू, कश्मीरी, संस्कृत और हिन्दी पुस्तकों की सूची

2- अंग्रेज़ी भाषा में लिखित पुस्तकों की सूची

3- सहायक शब्द कोशों की सूची

4- पाण्डुलिपि

5- अप्रकाशित स्वीकृत शोध-प्रबन्ध

6- उर्दू, कश्मीरी और हिन्दी में प्रकाशित सहायक पत्र-पत्रिकाओं की सूची

7- अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की सूची

8- कुछ अहम दस्तावेज़ों की फोटोस्टेट प्रतियाँ ।

कश्मीरी भाषा के कवियों की रचनाओं से उद्धरण देते समय मैंने उद्धृत खण्ड के हिन्दी पद्यानुवाद को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है और उसके मूल कश्मीरी पाठ को पाद-टिप्पणी के अन्तर्गत पढ़ने वालों की जिज्ञासा-शान्ति एवं अनुवाद की उपयुक्तता को परखने के हेतु साथ दिया है । सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध में जिन कश्मीरी पद्यांशों का प्रयोग किया गया है उनका हिन्दी पद्यानुवाद मैंने स्वयं किया है और इस अनुवाद कार्य को पूरा करने में मुझे ढाई वर्ष का समय लगा । अनुवाद करने का पूर्व अनुभव अवश्य था । रेडियो कश्मीर के लिये कश्मीरी

नाटकों एवं कविताओं का हिन्दी अनुवाद अन्य अनुवादकों के साथ वर्षों से करता चला आ रहा था। कई पत्रिकाओं के लिये भी कश्मीरी रचनाओं के हिन्दी अनुवाद किये हैं लेकिन जब यह काम हाथ में लिया तो बडी दुश्वारियाँ सामने आईं। अनुवाद कार्य करते समय मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इस काम के लिये न केवल अपार सहनशीलता की अपेक्षा है अपितु तलाशेयार की धुन भी दरकार है। मैं समझता हूँ कि प्रस्तुत विषय के साथ पूर्ण न्याय नहीं हो सकता था यदि बिना अनुवाद के अथवा गद्यानुवाद के आधार पर काम चलाया जाता। मैं काम चलाऊ थीसिस नहीं लिखना चाहता अतः पथरीले डगर पर आगे क़दम बढ़ाता गया, तलवे ज़रूर छलनी हुए लेकिन मंज़िल को पास देख कर सन्तोष की साँस भी ली।

मैं यह कदापि नहीं समझता कि मैंने जो पद्यानुवाद किये हैं केवल वही उत्तम हैं या हर्फ़े आख़िर हैं। मेरा यह दावा कदापि नहीं रहा है। यह तो एक सामान्य प्रयास मात्र है क्योंकि हिन्दी पाठकों के सम्मुख जब तक कश्मीरी रचना का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत न किया जाता तब तक न तो विषय के साथ न्याय हो पाता और न ही सही मूल्यांकन सम्भव होता। मैं इस अनुवाद कार्य को प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग मानता हूँ।

मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष {चेयरमैन} का अत्यन्त

आभारी हूँ जिन्होंने सन् 1986 ई0 में शोध विषय से सम्बन्धित मेरी 'लघु शोध योजना' को स्वीकार करके ग्यारह हज़ार रूपये की वित्तीय सहायता प्रदान की। आयोग के विशेषज्ञों द्वारा इस प्रकार के शोध-कार्य को मान्यता प्राप्त हुई - मेरे लिये यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

आधुनिक कश्मीरी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर सम्यक् प्रकाश डालने के हेतु मैं ने प्रतिष्ठित एवं प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं को ही अध्ययन के लिये चुना है। यदि मैं अन्य कवियों को भी लेता तो शायद यह प्रबन्ध एक वर्णनात्मक गद्य रचना का रूप धारण कर लेता और शोध के लिये जिस गहन अध्ययन, वैचारिक गरिमा एवं तथ्य निरीक्षण के हेतु अपनायी जाने वाली विश्लेषण पद्धति की अपेक्षा रहती है वह इस प्रबन्ध में कहीं देखन को न मिलती।

इस शोध प्रबन्ध को प्रस्तुत करते समय आज मैं प्रसन्न तो हूँ लेकिन अपने विगत की स्मृति मुझे रूला भी देती है। काश! यह थीसिस मैं स्वयं अपने हाथों कश्मीर विश्वविद्यालय के परिसर में उपकुलपति महोदय, जो कश्मीरी भाषा के प्रतिष्ठित लेखक और कश्मीरी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान हैं, के सम्मुख पेश कर पाता।

मालूम नहीं भविष्य के गर्भ में और क्या छिपा है। बहरहाल, दहकते शोलों को बाँहों में समेटना ही तो ज़िन्दगी है।

नौ वर्षों की कठिन साधना के बाद मैं अपने प्रयास में कहाँ तक सफल हुआ हूँ इस का निर्णय विद्वज्जन ही करेंगे जो अपनी असाधारण प्रतिभा, तथ्य ग्रहण शक्ति एवं सन्तुलित विवेक बुद्धि के बल पर शोध की नई सम्भावनाओं को रेखांकित करते हैं तथा जिन में कांच और कंचन को पहचानने की अद्भुत क्षमता रहती है। उनका न्यायापुत निर्णय इस प्रकार के शोध के लिये संगीमील की हैसियत रखता है।

सोमवार, 2 अगस्त 1993 ई0
श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा
सं0 2050 वि0
रक्षा बन्धन

(प्रो0 डॉ0 भूषणलाल कौल)
आचार्य एवं भूतपूर्व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर।

